

28. दुर्गादास राठौर की स्वामी-भक्ति

— अमरदेव आंगिरस

जोधपुर के महाराज जसवन्त सिंह का पुत्र था अजीत सिंह। महाराज की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने उनके अबोध पुत्र अजीत सिंह का उत्तराधिकार अस्वीकार कर दिया। औरंगजेब ने जसवन्त सिंह के दीवान के वीर पुत्र दुर्गादास को आठ हजार स्वर्ण मुद्राएं रिश्वत में देना चाहीं कि वे विधवा तथा नन्हें राजकुमार की रक्षा से हट जाएं। बादशाह ने यह भी संदेश दिया कि राजकुमार अजीत सिंह दिल्ली आ जाएं।

दुर्गादास की तलवार का सिक्का सभी मानते थे। उनकी कर्तव्यनिष्ठा से भी सभी परिचित थे। उन्होंने बादशाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। राजकुमार परिश्रमी, कर्मठ, न्यायपरायण तथा प्रजा प्रेमी हो, अतः इसके लिए दुर्गादास ने उसके रहन-सहन तथा घूमने-फिरने पर पाबन्दियां लगा दीं। उन्होंने कठोर अनुशासन में अजीत सिंह की शिक्षा-दीक्षा पूर्ण करवायी। उन्होंने पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से अपने स्वामी की सुरक्षा की।

सिंहासन प्राप्त करने पर कुछ स्वार्थी दरबारियों ने दुर्गादास से द्वेषभावना के कारण अजीत सिंह को उनके विरुद्ध उकसाना शुरू कर दिया। एक दिन अजीत सिंह ने राजसभा में दुर्गादास राठौर से कहा— “आपने मेरा अभिभावक बनकर मुझे इतने कष्ट दिए और मेरी इतनी प्रताड़ना की कि मुझे स्मरण आने पर आज भी कष्ट होता है। उस कठोर व्यवहार के लिए मैं आपको यह दण्ड देता हूं कि आप जोधपुर की गलियों में मिट्टी का भिक्षापात्र लेकर भिक्षा मांगें।”

पूरी राजसभा में सन्नाटा छा गया। जिस शूरवीर के नाम से सारा भारत कांपता था, और जिसने अपने प्राणों पर खेलकर अजीत की रक्षा की थी तथा योग्य बनाया था, उसे ऐसा दण्ड ? लेकिन दुर्गादास के चेहरे पर शिकन तक न आई। उन्होंने सिर झुकाकर राजाज्ञा स्वीकार कर ली।

थोड़े ही दिन बीते थे कि महाराज अजीत सिंह घोड़े पर बैठकर नगर में घूमने निकले। उनके साथ कुछ सैनिक भी थे। उन्होंने एक धनी के द्वार पर फटे-चिथड़े में एक भिखारी को देखा उसके हाथ में मिट्टी का करवा था। महाराज ने उसे पहचान लिया और पूछा—“मंत्री जी, क्या आप प्रसन्न हैं ?”

दुर्गादास ने विनम्रता से कहा— “बहुत प्रसन्न हूं। राजधानी में प्रजा समृद्ध है। लोग उत्तम वस्त्र पहनते हैं। मेरे लिए उससे बड़ी क्या बात होगी ? मेरे शरीर पर चिथड़े हैं और मुझे कभी भोजन मिलता है, कभी नहीं। लेकिन इससे प्रजा को कोई हानि नहीं है।”

“तो क्या आप फिर भी प्रसन्न हैं ? मुझ से भी” महाराज ने पूछा।

“निस्संदेह, यदि मैंने आपको बचपन में कठोर नियन्त्रण में न रखा होता तो आज मैं नगर सेठ से भी अधिक धन का स्वामी होता। परन्तु उस स्थिति में राजधानी की प्रजा मेरी तरह निर्धन होती।”

“ओह, आप मेरे पिता के समान हैं। मंत्री, मुझे क्षमा करें।” महाराज अजीत सिंह ने दुर्गादास राठौर को गले लगा लिया। वे पैदल चलकर उन्हें सादर राजधानी ले आए तथा पुनः उन्हें पूर्व पद फिर से प्रदान किया।

अभ्यास

1. दुर्गादास राठौर ने स्वर्ण मुद्राएं अस्वीकार क्यों की ?
2. दुर्गादास राठौर ने अजीत सिंह का पालन पोषण किस प्रकार किया ?
3. दुर्गादास राठौर को अजीत सिंह ने दण्डित क्यों किया ?
4. दुर्गादास से किन शब्दों में अजीत सिंह ने क्षमा मांगी ?

